इकाई 10 ब्रूहि कोऽस्मिन् युगे कालिदासायते (डॉ. पुष्पा दीक्षित)

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 डॉ. पुष्पा दीक्षित का जीवनवृत्त एवं कर्तृत्त्व

10.3 'ब्रूहि कोऽस्मिन् युगे कालिदासायते' में वर्णित युगबोध एवं सामाजिक सन्देश

10.4 सारांश

10.5 शब्दावली

10.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

10.7 बोध प्रश्न/उत्तर

10.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप–

- डॉ. पुष्पा दीक्षित के जीवनवृत्त एवं कर्तृत्व को जान सकेंगे।
- 'ब्रूहि कोऽस्मिन् युगे कालिदासायते' में वर्णित युगबोध एवं सामाजिक सन्देश को जान सकेंगे।
- इसमें प्रयुक्त तकनीकी शब्दावली को जान सकेंगे।

10.1 प्रस्तावना

'ब्रूहि कोऽस्मिन् युगे कालिदासायते' में कवियित्री पुष्पा दीक्षित ने प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति की ओर ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास एवं वर्तमान आधुनिकता पर कुठाराघात किया है। वर्तमान समय में परोपकार सम्बन्धी कार्य मानवता, न्याय और बहादुर सैनिको के वीरता के माध्यम से आधुनिक युग के मनुष्यों और उनकी मानवता पर व्यंग्यात्मक कविता के माध्यम से लोगों के हृदय को झंकृत कर दिया है। इस प्रकार इकाई–09 ब्रूहि कोऽस्मिन् युगे कालिदासायते (डॉ. पुष्पा दीक्षित) में डॉ. पुष्पा दीक्षित के जीवनवृत्त एवं कर्तृत्व तथा 'ब्रूहि कोऽस्मिन् युगे कालिदासायते' में वर्णित युगबोध एवं सामाजिक सन्देश को स्पष्ट किया जायेगा।

10.2 डॉ. पुष्पा दीक्षित का जीवनवृत्त एवं कर्तृत्त्व

जीवनवृत्त–

व्याकरण की मूर्धन्य विदुषी, पाणिनि के विज्ञान को जन–जन में स्थिर करने वाले **डॉ. श्रीमती पुष्पा दीक्षित** का जन्म **मध्यप्रदेश के जबलपुर** नगर में 1 जुलाई 1942 ई. को हुआ। इनके पिता का नाम **पं. सुन्दरलाल शुक्ल** एवं माता का नाम **श्रीमती जानकी देवी शुक्ल** है। इनके पिता संस्कृत के विद्वान् थे, जिनसे इन्होंने संस्कृत की प्राथमिक शिक्षा प्राप्त किया। इसके पश्चात् कृष्ण बोधाश्रम, संस्कृत महाविद्यालय, जबलपुर में

सम्मानित आचार्य प्रवर **पंडित विश्वनाथ त्रिपाठी** के द्वारा **व्याकरण** का अध्ययन किया। इन्होंने स्नातकोत्तर परीक्षा जबलपुर विश्वविद्यालय से संस्कृत में प्रथम श्रेणी में स्वर्ण पदक के साथ उत्तीर्ण किया। इसके बाद इन्होंने **'शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,** विलासपुर में लगभग 39 वर्षों तक अध्यापन कार्य किया। इन्होंने अखिल भारतीय स्तर की विभिन्न संगोष्ठियों में शताधिक शोधपत्रों का वाचन किया है। जिनमें से अनेक शोधपत्र प्रकाशित है। अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन (ऑल इण्डिया ओरियण्टल कांफ्रेस) जो प्रति दो वर्ष में राष्ट्र के भिन्न–भिन्न स्थानों पर होता है, में नियमित सदस्य के रूप में **'भाषाविज्ञान और व्याकरण'** पर नियमित रूप से गत वर्षों में शोधपत्र पढ़ें हैं। दिल्ली, सागर, इलाहाबाद, वाराणसी तथा लखनऊ आदि देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में आयोजित संगोष्ठियों में आपकी सक्रिय प्रतिभागिता होती रही है।

राष्ट्रिय स्तर के संस्कृत कवि सम्मेलनों में प्रतिभागिता–प्रायः सभी अखिल भारतीय संस्कृत कवि सम्मेलनों में आप आमन्त्रित रहती है। उल्लेखनीय है कि 13 वें विश्वसंस्कृत सम्मेलन, जो स्काटलैण्ड के एडिनवर्ग विश्वविद्यालय में आयोजित था, उसमें काव्यपाठ के लिए भारत से 15 राष्ट्रिय संस्कृत कवियों का चयन किया गया था। उन 15 मूर्धन्य कवियों में एक नाम डॉ. पुष्पा दीक्षित का भी था। प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी अखिल भारतीय कालिदास समारोह में आपको कवि के रूप में आमन्त्रित किया गया है। आपके निर्देशन में अनेक छात्रों ने शोधोपाधि प्राप्त की है।

राष्ट्र के विभिन्न प्रदेशों में पाणिनिशाला–पाणिनि के इस विज्ञान को जन–जन में स्थिर करने के लिए वे अपनी संस्था **'पाणिनीय शोध संस्थान'** में पाणिनीय कार्यशाला का आयोजन करके चार माह में व्याकरण के सिद्धांतो को स्पष्ट कर देती हैं। इस पाणिनीयशाला में व्याकरण के अध्ययन के हेतु देश–विदेश से छात्र तथा प्राध्यापक उपस्थित होते हैं, जिनके निवास और भोजन की व्यवस्था जनसहयोग से कोसल संस्कृत समिति के द्वारा की जाती है तथा अध्यापन डॉ. पुष्पा दीक्षित द्वारा किया जाता है। इस पाणिनीय कार्यशाला में भारत के अतिरिक्त अमेरिका से श्री नरेन्द्रन्, नेपाल से दावा ल्हासा, बांगलादेश में लुब्ना मरियम, शिकांगो से वरुण खन्ना, चीन से चाउ यन्, अमेरिका से स्वरूप देव, केलिफोर्निया से मित्तल त्रिवेदी आदि ने भी आकर पाणिनीय व्याकरण का अध्ययन किया है।

विलासपुर में पाणिनीशाला–प्राचीन पद्धतियों के रहते हुए भी अधिकांश लोग व्याकरण से पलायन करते हैं अथवा आंशिक रूप से पढ़कर काम चलाते है। इसका कारण है दोनों पद्धतियों का पाणिनीय प्रक्रिया विज्ञान से दूर होना। अतः **'पाणिनीय अष्टाध्यायी'** के विज्ञान को स्पष्ट करते हुए एक प्रयोग को बनाने की प्रक्रिया बतलाकर उसके समानाकृति सारे प्रयोगों को उसी स्थल पर दर्शाकर इदमित्थम् बतला देने वाली एक पद्धति अभीष्ट थी, जिससे समग्र 'अष्टाध्यायी' अत्यल्प काल में हृदयगत हो सके। इस तीसरी पद्धति का आविष्कार आचार्य पुष्पादीक्षित ने किया है। उन्होंने लगभग 40 वर्षों के अनुसन्धान से **'पाणिनीय अष्टाध्यायी'** के **'प्रक्रिया विज्ञान'** को स्पष्ट करने वाली एक ऐसी सर्वथा नवीन **'गणितीय विधि'** आविष्कृत की है जिसमें **'अष्टाध्यायी का समग्र प्रक्रियाविज्ञान'** चार मास में हृदयगत हो जाता है। इस गणितीय विधि से पाणिनीय व्याकरण के अध्ययन हेतु राष्ट्र के विभिन्न प्रदेशों में भी डॉ. पुष्पा दीक्षित को बुलाया जाता है, जिसमें छात्र तथा प्राध्यापक उपस्थित होते हैं।

गणितीय विधि–पाणिनी के बाद से लेकर अभी तक 3500 वर्षों में पाणिनी को किसी विद्वान् ने इस प्रकार व्याख्यान नहीं दिया है। वस्तुतः पाणिनी का शास्त्र **'गणितीय**

विधि' पर आश्रित है, और पुष्पा दीक्षित ने उस गणितीय विधि का आविष्कार किया है। अतः पाणिनीय व्याकरण पर पुष्पा दीक्षित का यह कार्य वस्तुतः एक बहुत बड़ी क्रान्ति है।

वास्तव में यह एक बहुत बड़ा क्रान्तिकारी कदम है क्योंकि उन्होंने परम्परा से चले आने वाले लकारों के प्रचलित अकारादि क्रम को तोड़कर पाणिनिविज्ञानानुसार उसके दो हिस्से कर दिये हैं और सार्वधातुक–आर्धधातुक प्रत्ययों को अलग–अलग कर दिया है। पाणिनीय धातुओं में से एक भी धातु को कम किये बिना पाणिनीय धातुपाठ के सारे धातुओं को भी प्रक्रिया के क्रम से पुनर्व्यवस्थित करके उन्हें प्रक्रिया से सटा दिया है।

गणितीय विधि से पढ़ा हुआ दस वर्ष का बालक भी किसी भी धातु के दसों लकारों में रूप बना सकता है। प्रक्रिया का यह चिन्तन सर्वथा अपूर्व है। इससे पूर्व इस प्रकार से अष्टाध्यायी का अथवा प्रयोगों का, कभी भी, कोई विचार किया ही नहीं गया है। व्याकरण शास्त्र के महोदधि (समुद्र) में साधारण से साधारण बालक भी मछली के समान तैरने लगे, यही इसका लक्ष्य है। उन्होंने नन्हें बालकों पर इसका प्रयोग किया है। वे खेलते–खेलते व्याकरण शास्त्र की प्रक्रिया किया है।

गणितीय पद्धति का आश्रय लेकर वे लगभग 40 वर्षों से ग्रन्थलेखन में संलग्न है। पाणिनीय प्रक्रिया विज्ञान का आश्रय लेकर उन्होंने 8 भागों में अष्टाध्यायी सहज बोध को राष्ट्रभाषा में लिखा है और 13 भागों में **'नव्यसिद्धांत कौमुदी'** को देववाणी में लिखा है। इसी क्रम से अनेक कोष तैयार किये है।

व्याकरण कार्य–डॉ. पुष्पा दीक्षित के व्याकरण 'अष्टाध्यायी सहजबोध' 8 खण्डों में इसके चार भाग प्रकाशित है और चार भाग अप्रकाशित है।

- अष्टाध्यायी सहज बोध, प्रथम खण्ड–तिङ्गत सर्वधातुक लकार
- अष्टाध्यायी सहज बोध, द्वितीय खण्ड–तिङ्गन्त आर्धधातुक लकार
- अष्टाध्यायी सहज बोध, तृतीय खण्ड–कृदन्त
- अष्टाध्यायी सहज बोध, चतुर्थ खण्ड–तद्धित
- आर्धधातुक प्रत्ययो की इडागम व्यवस्था
- शीघ्रबोधव्याकरणम्
- कृदन्तकोष दो कोष
- तिङन्तकोष तीन भाग
- प्रकरणनिर्देशसमन्वित महर्षिपाणिनिप्रणीत अष्टाध्यायी सूत्रपाठ
- प्रक्रियानुसारी–पाणिनीयधातुपाठ
- सनाद्यन्तधातुपाठः
- पाणिनीयधातुपाठः सार्थः
- इडागम
- तिङ्कत्कोषः, प्रथमः सार्वधातुकखण्डः
- तिङ्कत्कोषः, द्वितीयः आर्धधातुकखण्डः
- लकारसरणिः (चत्वारो भागः)

- णिजन्तकोष
- सन्नन्तकोष
- यङन्तकोष
- यङ्लुगन्तकोष
- सस्स्वरः पाणिनीयधातुपाठ (सार्वधातुकप्रत्ययोपयोगी)
- सस्वरः पाणिनीयधातुपाठः (आर्धधातुकप्रत्ययोपयोगी)
- नव्यसिद्धान्तकौमुदी, 13 भागों में स्वरप्रक्रियाविज्ञान सहित
- तिङन्तसिद्धि
- अष्टाध्यायी की अध्ययन पद्धति
- तिङन्तप्रक्रिया
- धात्वधिकारीयं सामान्यमङ्गकार्यम्

यह कार्य राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की परियोजना के अन्तर्गत किया जा रहा है। सिद्धांतकौमुदी में पाणिनीयक्रम का व्युत्क्रम होने से होने वाली विसंगतियों को हटाकर इसमें पाणिनीयक्रम का अवलम्बन लेकर कार्य किया जा रहा है। इसमें एक रूप का ज्ञान होने से उसके समानाकार सारे रूपों का परिज्ञान स्वयं ही हो जाएगा।

साहित्यिक कार्य–

1. **अग्नि शिखा**–सन् 1984 ई. में संस्कृत/गीतिकाव्य 'अग्निशिखा' का प्रणयन तथा प्रकाशन हुआ। इस गीतिकाव्य में एक ही रस विप्रलम्भ शृंगार पर आश्रित 50 सर्वथा छन्दोबद्ध तथा रसाभिभूत कर देने वाले, भारत के मूर्धन्य संस्कृत विद्वानों के द्वारा प्रशंसित गीत हैं। जिसमें सारे गीत एक ही रस पर ही आश्रित हो, ऐसा यह प्रथम संस्कृत गीतिकाव्य है।
2. **शाम्भवी**–यह भी संस्कृत गीतकाव्य है। इसके गीतों में वर्तमान सामाजिक विसंगतियों पर तीक्ष्ण अधिक्षेप है।
3. **अपराजितवधूमहाकाव्यम्**–डॉ. पूर्णचन्द्र शास्त्र रचित 'अपराजितवधु' का संपादन और अनुवाद।
4. **प्रबुद्धभारतम्**–डॉ. पूर्णचन्द्र शास्त्री रचित 'प्रबुद्धभारतम्' संस्कृत महाकाव्य का सम्पादन और अनुवाद।
5. **सौन्दर्यलहरी**–अनुवाद और व्याख्या।

विविध प्राप्त सम्मान–

1. **वेदवेदाङ्गसम्मान**–महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रियवेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जयिनी द्वारा दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में प्रतिष्ठान के अध्यक्ष मानवसंसाधन विकास मंत्रालय के माननीय मन्त्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी द्वारा दिनांक 14 अगस्त 2003 को व्याकरण विषय के लिए सम्मानित किया गया है।
2. **सर्टिफिकेट ऑफ ऑनर**–भारत के महामहिम राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम द्वारा 15 अगस्त 2004 में आपको संस्कृत में निपुणता तथा शास्त्र में पाण्डित्य के लिए 'सम्मान प्रमाण पत्र' **सर्टिफिकेट ऑफ ऑनर** आपको दिया गया है।

3. **राजकुमारी पटनायक सम्मान**–14 सितम्बर 2004 को प्रदेश के माननीय राज्यपाल महामना श्री पी.सी. सेठ के द्वारा भाषा के क्षेत्र में अप्रतिम योगदान के लिए राजकुमारी पटनायक सम्मान 2003 से अलंकृत किया गया है।

4. **छत्तीसगढ़ राज्य अलंकरण सम्मान**–1 नवम्बर 2007 को आपको छत्तीसगढ़ राज्य शासन द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य अलंकरण सम्मान से दो लाख रूपये की राशि तथा सम्मान पत्र देकर विभूषित किया गया है।

5. **वाचस्पति उपाधि**–26 दिसम्बर 2011 को उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार ने मानद उपाधि 'वाचस्पति' प्रदान की।

6. **महामहोपाध्याय उपाधि**–24 मार्च 2011 को उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार ने मानद उपाधि 'महामहोपाध्याय' प्रदान की।

7. **संस्कृतात्मा सम्मान**–22 फरवरी 2013 को संगमनेर महाविद्यालय ने पुरस्कारसहित 'संस्कृतात्मासम्मान' प्रदान किया।

संस्कृत के हित में सतत् कार्य–कोमल संस्कृति समिति की अध्यक्षा श्रीमती डॉ. पुष्पा दीक्षित संस्कृत भाषा के प्रति सर्वतोभावेन समर्पित है। उनके द्वारा शासन का ध्यान निरन्तर संस्कृत भाषा के उन्नयन और नीति निर्धारण के विषय में आकर्षित किया जाता है।

आपका एक अपना लगभग 10000 पुस्तकों का पुस्तकालय है, जिसमें लगभग संस्कृत वाङ्मय की पुस्तकें हैं, जहाँ आकर शोधछात्र अपने विषयों से सम्बन्धित पुस्तकों का अवलोकन कर सकते हैं।

जनसाधारण में संस्कृत की रुचि बढ़ाने के लिए संस्कृत भाषा के प्रति जागरुकता बढ़ाने के लिए वे निरन्तर गीतापाठ, स्तोत्रपाठ तथा शुद्ध संस्कृत उच्चारण की शिक्षा स्थानीय लोगों को निशुल्क देती रहती हैं। आपका विश्वास है कि संस्कृत से ही भारत की पहिचान है अतः संस्कृत भाषा को जन–जन तक पहुँचाना ही आपके जीवन का एक मात्र लक्ष्य है।

छत्तीसगढ़ में दो संस्कृत विद्यालयों की स्थापना–

डॉ. पुष्पा दीक्षित ने स्थानीय लोगों के सहयोग से वर्ष 2002 में ग्राम अडभार पेण्ड्रा जिला विलासपुर में एक संस्कृत विद्यालय वासुदेव संस्कृत विद्यापीठ की स्थापना की है। जहाँ इस सत्र में 67 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं, जिनके निःशुल्क भोजन, आवास शिक्षण आदि की व्यवस्था जनसहयोग से की जा रही है। यद्यपि संस्था का पृथक् रूप से पंजीयन है तथापि वर्तमान में उस संस्था की संरक्षक एवं अध्यक्षा पुष्पा दीक्षित ही हैं। जिनके सद्प्रयासों से संस्था सुचारुरूप से गत पाँच वर्षों से कार्यरत है।

आपके ही सत्प्रयासों से 2004 में महामाया ट्रस्ट रतनपुर द्वारा एक वैदिक संस्कृत विद्यालय की स्थापना की गयी है। संस्कृत की रक्षा से राष्ट्र की रक्षा इस आदर्श को लेकर उन्होंने सारा जीवन बिताया है। अतः आचार्या पुष्पा दीक्षित का समग्र जीवन संस्कृत के लिए समर्पण का एक उच्च आदर्श है।

10.3 'ब्रूहि कोऽस्मिन् युगे कालिदासायते' में वर्णित युगबोध एवं सामाजिक सन्देश

प्रस्तुत कविता **'ब्रूहि कोऽस्मिन् युगे कालिदासायते'** में कवियित्री डॉ. पुष्पादीक्षित ने प्राचीनता को भुलाकर आधुनिकता की ओर वह रहे समाज को पथ प्रदर्शित करते हुए कह रही है कि भारत देश के लोगों द्वारा भुला–बिसरा दी जा रही भारतीय सभ्यता, संस्कृति, धर्मदर्शन, आचार–विचार तथा कर्तव्य और व्यवहार के सन्दर्भों में है। इसमें कवियित्री डॉ. पुष्पादीक्षित का कथन है कि क्या वर्तमान समाज में कोई ऐसा पुरुष–स्त्री है जो पूर्वजों द्वारा निर्धारित **'मार्ग यद्यदाचरितोश्रेष्ठ स्तद्देवेतरोजनः'** का आचरण करता हुआ दिखाई पड़ रहा है अर्थात् नहीं। कवियित्री पुष्पा दीक्षित ने अपनी हृदयगत पीड़ा को व्यक्त करते हुए कहा है कि–

सांसारिक कष्टों से निरंतर पीड़ित, असहाय, वंचित तथा अकिचंन व्यक्ति अधिसंख्य मात्रा में कष्ट पा रहे है। कवयित्री ऐसे दीन–हीन लोगों पर वृक्ष की तरह स्वयं कष्ट सहकर दया करने वाले परोपकारी महानुभावों की कमी के कारण दुःख प्रकट कर रही है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पंचम अंक में कहा गया है कि–**'अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णं शमयति परितापं छायया संश्रितानाम्'** क्योंकि पुष्पा दीक्षित ने कहा है कि–

तिग्मरश्मेः करैस्तापितायां क्षितौ
स्वेदसिक्तं धुतश्वाससन्तानकम्।
नग्नपद्भ्यां चलन्तं विलोक्यावध्वगं
छाययाच्छादयन् को नु वृक्षायते।।

अर्थात् प्रखर किरणों वाले सूर्य की किरणों से धरती के तप जाने पर पसीने से लथपथ होकर, श्वास की पंक्तियों को धौकने वाले, नंगे पैरों से चलने वाले किसी पथिक को देखकर कौन है जो उसे आच्छादित करता हुआ वृक्ष जैसा आचरण करता है? अर्थात् वर्तमान समय में कोई पुरुष ऐसा नहीं है जो ऐसा आचरण करता हो जबकि प्रकृति के जड़ और चेतन से शिक्षा मानव समाज को ग्रहण करनी चाहिए। क्योंकि कहा गया है कि वृक्ष स्वयं कभी फल–फूल इत्यादि उत्पादित पदार्थों का स्वयं के लिये उपभोग नहीं करते नदियाँ कभी अपनी बहती धारा का जल ग्रहण नहीं करती। परमार्थ के लिए उनका जीवन होता है। परमार्थ के अर्थानुसार सत्कर्म, मानवता पूर्ण भाव, आदर्श चरित्र व त्याग समर्पण से है तथा साधु वही है जो दूसरो को संताप से मुक्त करें तथा वृक्ष की तरह दूसरों को छाया प्रदान करें अर्थात् पालित एवं पोषित करें।

इसके अतिरिक्त कवियित्री ने कहा है कि आधुनिक युग में वंचित जनता के प्रति लोगों का उपेक्षा भाव घातक मात्रा में बढ़ गया है। कवयित्री परोपकारियों के लिए वृक्ष तथा कूप जैसे प्रतीकों का प्रयोग करती है। जिस प्रकार वृक्ष और कुआँ प्रतिदान की अपेक्षा किये बिना प्रचुर मात्रा में लोगों के अभाव पूर्ण करती है, इस प्रकार का परोपकार भाव मनुष्य वर्ग में नितान्त दुर्लभ हो गया है। इसी को अभिव्यक्त करते हुए कहा है कि–

कुचिंतायां तनौ शुष्कलालामुखं
भाषणायोद्यतेऽपि स्खलद्वाचिकम्।
वीक्ष्य शीतैर्मधूकाचितैर्वारिभि–
स्तत्तृषां नोदयन् को नु कूपायते।।

शरीर के सिकुड़ जाने पर सूख गयी है लार जिसकी ऐसे मुख वाले, बोलने के लिए उद्यत होने पर भी लड़खड़ाती हुई वाणी वाले (व्यक्ति को) देखकर ऐसा कौन है जो महुए से सिक्त ठंडे जल से उसकी प्यास को मिटाता हुआ, कुएँ जैसा आचरण करता है? अर्थात् आधुनिक समय में वृद्ध जनों की सेवा परोपकार एवं त्याग भाव से कोई भी पुरुष जिस प्रकार से कुँआ प्यासे को पानी पिलाकर तृप्त कर देता है वैसा सेवा कोई भी मनुष्य नहीं करता है। जबकि शास्त्रों में कहा गया है कि–

अभिवादनशीलस्य
नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते
आयुर्विद्या यशोबलम्।।

अर्थात् अभिवादनशील और नित्य वृद्धों की सेवा करने वाले मनुष्य की चार चीजें आयु, विद्या, यश और बल स्वतः बढ़ जाते है।

आधुनिक युग में न्याय जगत की दुरवस्था पर दुःख प्रकट किया जा रहा है। पाप तथा अनाचार के अधंकार में सत्य तथा असत्य का निर्णय कठिन हो जाता है क्योंकि सब एक जैसे लगने लगते हैं। इसलिये कवियित्री कहती है कि–

एकरूपे यदा हन्त सत्यानृते
अन्धकारेऽखिलं वस्तुजातं यथा।
धर्मसिंहासने सत्यरक्षाव्रती
न्यायकर्मण्यरे को नु हंसायते।।

कहने का आशय यह है कि जिस प्रकार अंधेरे में सारी वस्तुएँ एकरूप हुई जैसी रहती है, उसी प्रकार लोक में सत्य और झूठ एक में मिले हुए से रहने लगते हैं, तब धर्मसिंहासन पर अवस्थित सत्यरक्षा के लिए प्रण लिए ऐसा कौन है, जो न्यायकार्य में हंस जैसा आचरण करता है। कवियित्री कहना चाह रही है कि अन्धकार में समस्त संसार की वस्तुएँ एक जैसी प्रतीत होती है और रस्सी की भी सर्प जैसी प्रतीति होती है और उसी प्रकार अज्ञानता के कारण तथा न्याय व्यवस्था में चरमराहट होने के कारण झूठ और सच एक जैसी प्रतीति होती है। किन्तु यदि जिस राज्य का राजा न्यायशील है और हंस की तरह नीर–क्षीर विवेक का ज्ञान रखता है उस देश की प्रजा भी प्रसन्नचित्त और खुशहाल रहती है।

इस प्रकार पद्य में उपमान के रूप में ली गयी गाय भारतीय संस्कृति एवं मर्यादा का प्रतीक है। आजकल वह लोभरहित हो चली है। उसकी रक्षा करने वाली संतान जाने कहाँ है। वह असंतृप्त है। अपने नाश की आशंका से वह आँखों में आँसू भर कर मानो सहायता के लिए पुकार रही है, क्योंकि उसका भक्षण करने वाले उसे दबर्दस्ती खींचकर ले जा रहे हैं। इस परिस्थिति में कौन है जो उसके शत्रुओं का नाशकर उसे विजातीय बंधनों से मुक्त करे। इस प्रकार कवियित्री का कहना है कि–

क्षीणदुग्धा विवत्सा बुभुक्षाकुलाः
साश्रुनेत्रा गवाशैर्विकृष्टा मुहुः।
गा नदन्तीः समुत्प्रेक्ष्य शृङ्गाटके
बन्धनच्छेदनैः को नु गोपायते।।

अर्थात् कहने का आशय यह है कि जिन्होंने दूध देना बंद कर दिया है और जो बछड़े से रहित हैं, भूख से व्याकुल हैं, जिनके नेत्र अश्रुपूरित हैं (और जो) कसाइयों द्वारा बार–बार खींचकर ले जाई जा रही है, ऐसी क्रन्दन करती हुई गायों को चौराहे पर देखकर ऐसा कौन है जो उनके बंधन काटकर गोप (कृष्ण) जैसा आचरण करता है।

अत्यंत प्राकृतिक विषमताओं को सहकर शत्रुओं से देश की निरंतर रक्षा में लगे हुए भारतीय सेना के अजेय योद्धा ही सिंहों जैसा पराक्रम प्रदर्शित कर रहे है। उनेक अतिरिक्त देशहित में कार्यरत और कोई भी वर्ग नहीं दिखाई दे रहा है। इसी को अपनी कविता में कवियित्री पुष्पा दीक्षित ने **'ब्रूहि कोऽस्मिन् युगे कालिदासायते'** में कहा है कि–

शस्त्रजालं निकृत्यान्तरिक्षे रिपो
र्यो गिरीशस्य शृङ्गेऽपि योयुध्यते।
लज्जते शौर्यमप्यंजसा यत्क्रमे
तं विहाय क्षितौ को नु सिंहायते।।

अर्थात् कहने का आशय यह है कि जो (भारतीय सेना का सैनिक) शत्रु के शस्त्रसमूह को अंतरिक्ष में ही काटकर हिमालय के शिखर पर भी बार–बार युद्ध करता है (और) युद्ध में जिसकी स्फूर्ति देखकर शौर्य भी लजा जाता है, उसे छोड़कर धरती पर और कौन है जो सिंह जैसा आचरण करता है।

मनुष्य योनि से अतिरिक्त योनियाँ मोक्ष के अनुकूल नहीं है। मनुष्य ही कर्मपूर्वक ज्ञान प्राप्त करके मोक्ष के योग्य हो सकता है। अतः देवता भी आत्यंतिक मोक्ष के लिए मनुष्य योनि की स्पृहा करते हैं–

बड़े भागि मानुष तन पावा।
सुर दुरलभ सब ग्रन्थहिं गावा।।

(रामचरितमानस)

यह मनुष्य शरीर भोग हेतु नहीं अपितु कर्म–संलयन पूर्वक आत्मज्ञान के लिए है। फिर भी इस सम्भावना को योग्यता में परिवर्तन करने वाले लोग अत्यल्प हैं, जो परमेश्वर के पूर्ण स्वरूप (श्रीकृष्ण चन्द्र) पर एकाग्र होकर मुक्त हो पाते है। इसी भाव को कवियित्री ने अपने काव्य के माध्यम से व्यक्त करते हुए कहा है कि–

मानुषं प्राप्यं देवेप्सितं पुण्यतः
कालकूटे भवे कामना दीयते।
गोपिकारजंने कामनाभजंने
कृष्णचन्द्रानने कश्चकोरायते।।

कहने का आशय है कि देवता भी जिसकी कामना करते हैं, ऐसा मनुष्य शरीर प्राप्त करके भी (तुम्हारे द्वारा) कालकूट विष जैसे संसार में मन को लगाया जाता है, कामनाओं के भजंक और गोपिकाओं के रंजक भगवान् श्रीकृष्ण के मुख को निहारने में कौन है जो चकोर जैसा आचरण करता है।

भौतिकता के इस काल में सभी वस्तुओं का मूल्यांकन उनकी विक्रेयता के अनुसार ही किया जा रहा है क्योंकि पूरी दुनियां एक बाजार में परिणत हो चुकी है। फलतः काव्य आदि कलाएँ, जिनका सीधा सम्बन्ध अर्थ से नहीं है, वे उपेक्षित हो रही है। प्राचीन

लोगों में सुलभ रसिकता का अब नितांत अभाव दिखाई दे रहा है। कवि, काव्य तथा सामाजिक तीनों में निरंतर अवमूल्यन दिखाई पड़ रहा है

अद्य धारा निराधारा निरालम्बा सरस्वती।
पण्डिताः सर्वे भोजराजे दिवंगते।।

(भोजप्रबन्ध)

क्योंकि कवियित्री ने कहा है कि–

यान्तु विद्वज्जनाः काव्यकर्मक्षमा
मज्जयन्त्वम्बुधौ स्वीयकाव्योच्चयम्।
नास्ति गोष्ठीगरिष्ठोऽद्य राजा क्वचित्
काव्यपानैर्नु यो भोजराजायते।।

इसी को कवियित्री कहना चाह रही है कि काव्यकर्म करने वाले जो विद्वज्जन हैं, वे जाएँ और अपने काव्यसमूह का समुद्र में डूबा दें (क्योंकि) आज कहीं भी कविगोष्ठियों की गरिमा समझने वाला कोई राजा नहीं है, जो कवियों की सुमधुर कविता का पान करने में राजा भोज जैसा आचरण करता है। स्थितप्रज्ञ उस व्यक्ति को कहा जाता है जिसे अद्वैत तत्व का अनुभव हो जाता है। फलतः वह सभी प्राणियों में अपने को देखने तथा सब के दुःखों का स्वतः अनुभव कर पाने में समर्थ हो पाता है–

सर्वभूतेषु चात्मानं सर्वभूतानि चात्मानि।
ईक्षते योगयुक्तामा.....।।

(श्रीमदभगवतगीता)

इस प्रकार अद्वैत को उपलब्ध व्यक्ति के लिए परमेश्वर दूर नहीं रह जाता है।

तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति।

(श्रीमदभगवतगीता)

इसी को प्रो. पुष्पा दीक्षित ने अपने काव्य में स्पष्ट करते हुए कहा है कि–

सर्वभूते यदा स्वाकृतिर्दृश्यते
सर्वदुःखे यदा स्वव्यथा भुज्यते।
व्यापकं सर्वधीसाक्षितत्वं तदा
चक्षुषोरग्रतो हन्त कृष्णायते।।

अर्थात् कहने का आशय यह है कि जब सारे भूतों में अपना ही स्वरूप दिखने लगता है और सबके दुःख में अपनी ही व्यथा का अनुभव होने लगता है, तब अहा! सब ओर व्यापक और समस्त बुद्धियों का साक्षितत्व (आत्मचैतन्य) नेत्रों के आगे कृष्ण के समान आचरण करने लगता है अर्थात् कृष्ण बनकर प्रकट हो जाता है।

तथाकथित लोकतांत्रिक समाज में सभी लोग नेतृत्व के लिए लालायित है। लोभ के द्वारा प्रेरित ऐसे लोगों से डरी हुई राजसत्ता मानो रो रही है। आजकल ऐसे नायकों की नितांत अल्पता है जिन्हें जनता हृदय से अपना पथप्रदर्शक मानती हो फिर भी वे सत्ता का लोभ छोड़कर रामचन्द्र की भाँति लोगों के बीच रहकर उनके कष्टों का निवारण करें। इसलिए कवियित्री पुष्पा दीक्षित कह रही है कि–

श्येनगृध्रादिभिर्लुच्यमानं भृशं
रोदिति व्याकुलं राज्यसिंहासनम्।
तत् त्यजन् निःस्पृहं सर्वलोकैर्वृतः
सत्वशुद्धयाद्य को रामभद्रायते।।

कवयित्री ने विनयप्रदर्शन पूर्वक वास्तविक कवित्व के अभाव की ओर ध्यान दिलाया है। आजकल कविता में कलापक्ष के साथ भावपक्ष का वह समन्वय लुप्त है जो महाकवियों में देखा जाता है। अब कविता सायास किये जाने के कारण यांत्रिक तथा नीरस हो चली है–

शब्दगुम्फं विधाय क्वचिद् यत्नतः
काव्यबन्धं कथचिंद् वयं कुर्महे।
नैव भासो न माघो न बाणोऽधुना
ब्रूहि कोऽस्मिन् युगे कालिदासायते।।

कवियित्री कहना चाह रही है कि हम तो शब्दों को जोड़ गाँठकर, कभी–कभी बड़ी मेहनत से किसी प्रकार कविता की रचना कर लेते हैं। आज न तो भास है, न माघ है और न ही बाणभट्ट। फिर भी बताइए आज के इस युग में कौन कालिदास जैसा आचरण करता है–

अर्वाच्चो यदि गद्यपद्यरचनैश्वेतश्चमत्कुर्वते
तेषां मूर्ध्नि दधाति वामचरणं कर्णाटराजप्रिया।।

(विज्जिका)

बोध प्रश्न 1

1. निम्नलिखित प्रश्नों के ठीक उत्तरों पर सही (√) का चिन्ह लगाइयें।

I. डॉ. पुष्पादीक्षित का जन्म कहाँ हुआ है। (मध्यप्रदेश के जबलपुर नगर/ उत्तरप्रदेश के मेरठ)

II. ब्रूहि कोऽस्मिन् युगे कालिदासायते गीतिकाव्य कहाँ से लिया गया है। (शाम्भवी गीतिकाव्य/सौन्दर्यलहरी)

III. ब्रूहि कोऽस्मिन् युगे कालिदासायते में क्या प्रकट किया गया है।(आधुनिकता के दुष्परिणाम/आधुनिकता के सकारात्मक परिणाम)

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

I. गायों की रक्षा .....द्वारा करने की बात की जा रही हैं। (गोप के द्वारा/सैनिकों के द्वारा)

II. कवियित्री इस कविता में .....प्रकट रही है। (परोपकारी महानुभावों की कमी को/चोर लोगों की कमी को)

बोध प्रश्न 2

1. कवियित्री ने परोपकारी लोगों की कमी को कैसे प्रकट है।

.....

.....

2. प्रो. पुष्पा दीक्षित ने वंचित जनता के प्रति लोगों के उपेक्षाभाव को कैसे प्रकट किया है।

.....

.....

अभ्यास प्रश्न 1

ब्रूहि कोऽस्मिन् युगे कालिदासायते में वर्णित युगबोध एवं सामाजिक सन्देश को स्पष्ट कीजिए।

10.4 सारांश

इस काव्य के माध्यम से प्रो. पुष्पा दीक्षित ने मनुष्यों में प्राचीन संस्कृति और सभ्यता को बताते हुए वर्तमान आधुनिकता पर कुठाराघात किया है और मानवीय संस्कृति और सभ्यता, न्याय व्यवस्था, सैनिको की पीड़ा, गाय की दुर्दशा एवं उसकी वर्तमान पीड़ा, वर्तमान कवियों की दशा एवं दिशा लोकतन्त्र में नेतृत्व के भूखे लोलुप लोगों की दशा और प्रजावत्सल नायकों तथा राजाओं की नितान्त अभाव को तथा काव्य करने वाले कवियों एवं विद्वानों के आश्रयदाता राजाओं के अभाव को मनुष्य तन की प्रासंगिकता, इन्द्रियनिग्रह इत्यादि विषयों को इकाई–10 में ब्रूहि कोऽस्मिन् युगे कालिदासायते (डॉ. पुष्पा दीक्षित) में डॉ. पुष्पा दीक्षित के जीवनवृत्त एवं कर्तृत्व तथा 'ब्रूहि कोऽस्मिन् युगे कालिदासायते' में वर्णित युगबोध एवं सामाजिक सन्देश को स्पष्ट किया गया।

10.5 शब्दावली

क्षीणदुग्धा – जिन्होंने दूध देना बन्द कर दिया है

बुभुक्षाकुला – भूख से व्याकुल

निकृत्य – काटकर

शौर्य – शौर्य

विहाय – छोड़कर

व्यापक – सब ओर

सर्वभूत – सम्पूर्ण प्राणी

10.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- आधुनिक संस्कृत साहित्य संग्रह, सम्पादक डॉ. राजमंगल यादव, जे. पी. पब्लिशिंग हाउस दिल्ली
- अर्वाचीन संस्कृत साहित्य, डॉ. राजमंगल यादव, जे. पी. पब्लिशिंग हाउस दिल्ली
- संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, पंचम खण्ड, गद्य, आचार्य बलदेव उपाध्याय, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ, 2003
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' जयकृष्णदास, प्राच्यविद्या गद्य माला चौखम्भा भारती अकादमी वाराणसी 2016

- आधुनिक संस्कृत साहित्य दशा एवं दिशा, डॉ. मंजुलता शर्मा, परिमल पब्लिकेशसन्स नई दिल्ली
- संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र, प्रो. अभिराजराजेन्द्रमिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी प्र. सं. 2010
- संस्कृत साहित्य : बीसवीं शताब्दी, राधावल्लभ त्रिपाठी, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, 1999

10.7 बोध प्रश्न/उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. (i) मध्यप्रदेश के जबलपुर नगर (ii)शाम्भवी गीतिकाव्य (iii) आधुनिकता के दुष्परिणाम

2. (i) गोप के द्वारा (ii) परोपकारी महानुभावों की कमी को

बोध प्रश्न 2

1. सांसारिक कष्टों से निरंतर पीड़ित, असहाय, वंचित तथा अकिचंन व्यक्ति अधिसंख्य मात्रा में कष्ट पा रहे है। कवयित्री ऐसे दीन–हीन लोगों पर वृक्ष की तरह स्वयं कष्ट सहकर दया करने वाले परोपकारी महानुभावों की कमी के कारण दुःख प्रकट कर रही है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पंचम अंक में कहा गया है कि–**'अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णं शमयति परितापं छायया संश्रितानाम्'** क्योंकि पुष्पा दीक्षित ने कहा है कि–

तिग्मरश्मेः करैस्तापितायां क्षितौ
स्वेदसिक्तं धुतश्वाससन्तानकम्।
नग्नपद्भ्यां चलन्तं विलोक्यावध्वगं
छाययाच्छादयन् को नु वृक्षायते।।

अर्थात् प्रखर किरणों वाले सूर्य की किरणों से धरती के तप जाने पर पसीने से लथपथ होकर, श्वास की पंक्तियों को धौकने वाले, नंगे पैरों से चलने वाले किसी पथिक को देखकर कौन है जो उसे आच्छादित करता हुआ वृक्ष जैसा आचरण करता है? अर्थात् वर्तमान समय में कोई पुरुष ऐसा नहीं है जो ऐसा आचरण करता हो जबकि प्रकृति के जड़ और चेतन से शिक्षा मानव समाज को ग्रहण करनी चाहिए। क्योंकि कहा गया है कि वृक्ष स्वयं कभी फल–फूल इत्यादि उत्पादित पदार्थों का स्वयं के लिये उपभोग नहीं करते नदियाँ कभी अपनी बहती धारा का जल ग्रहण नहीं करती। परमार्थ के लिए उनका जीवन होता है। परमार्थ के अर्थानुसार सत्कर्म, मानवता पूर्ण भाव, आदर्श चरित्र व त्याग समर्पण से है तथा साधु वही है जो दूसरो को संताप से मुक्त करें तथा वृक्ष की तरह दूसरों को छाया प्रदान करें अर्थात् पालित एवं पोषित करें।

2. कवियित्री ने कहा है कि आधुनिक युग में वंचित जनता के प्रति लोगों का उपेक्षा भाव घातक मात्रा में बढ़ गया है। कवयित्री परोपकारियों के लिए वृक्ष तथा कूप जैसे प्रतीकों का प्रयोग करती है। जिस प्रकार वृक्ष और कुआँ प्रतिदान की अपेक्षा किये बिना प्रचुर मात्रा में लोगों के अभाव पूर्ण करती है, इस प्रकार का परोपकार

भाव मनुष्य वर्ग में नितान्त दुर्लभ हो गया है। इसी को अभिव्यक्त करते हुए कहा है कि–

कुचिंतायां तनौ शुष्कलालामुखं
भाषणायोद्यतेऽपि स्खलद्वाचिकम्।
वीक्ष्य शीतैर्मधूकाचितैर्वारिभि–
स्तत्तृषां नोदयन् को नु कूपायते।।

शरीर के सिकुड़ जाने पर सूख गयी है लार जिसकी ऐसे मुख वाले, बोलने के लिए उद्यत होने पर भी लड़खड़ाती हुई वाणी वाले (व्यक्ति को) देखकर ऐसा कौन है जो महुए से सिक्त ठंडे जल से उसकी प्यास को मिटाता हुआ, कुएँ जैसा आचरण करता है? अर्थात् आधुनिक समय में वृद्ध जनों की सेवा परोपकार एवं त्याग भाव से कोई भी पुरुष जिस प्रकार से कुँआ प्यासे को पानी पिलाकर तृप्त कर देता है वैसा सेवा कोई भी मनुष्य नहीं करता है। जबकि शास्त्रों में कहा गया है कि–

अभिवादनशीलस्य
नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते
आयुर्विद्या यशोबलम्।।

अर्थात् अभिवादनशील और नित्य वृद्धों की सेवा करने वाले मनुष्य की चार चीजें आयु, विद्या, यश और बल स्वतः बढ़ जाते है।

अभ्यास प्रश्न

इस प्रश्न का उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।